इन अन्धविश्वासों से पीछा छुड़ायें

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन अंधविश्वासों से पीछा छुड़ायें

कोई जमाना था, जब मनुष्य प्रकृति के रहस्यों को ठीक तरह समझ नहीं पा रहा था । अन्तरिक्ष में दृश्यमान ग्रह-नक्षत्र उसे देवी-देवता प्रतीत होते थे और उन्हीं की अनुकूलता-प्रतिकूलता से विविध प्रकार की विपत्तियों का तथा सुविधाओं का आना समझा जाता था । चारों ओर आश्चर्य ही आश्चर्य दीखता था और प्रतीत होता था, कि जो कुछ घटित होता है, उसका कारण देवताओं का रोष अथवा अनुग्रह है ।

बादल गरजते थे, बरसते थे, बिजली कड़कती थी, यह सब आकाशवासी देवताओं का कृत्य माना जाता था । चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण के बारे में तो, अभी भी जन समुदाय की यही मान्यता है । राहु केतु नामक दैत्य आक्रमण करके इन देवताओं को दुःख देते हैं । इसलिए इनका संकट दूर कर देने के लिए दान-पुण्य करना चाहिए, विशेषतया शूद्र-अछूतों को, क्योंकि वे दैत्यों के वंशज हैं ।

मृतकों के बारे में मान्यता है कि वे भूत-पलीत बन कर अपने परिवार वालों को अथवा दूसरे परिचितों को त्रास देते हैं और भेंट-पूजा लेने के उपरान्त शान्त होते हैं ।

पशु-पक्षियों के बारे में मान्यता थी कि वे भी मनुष्यों से अधिक अदृश्यदर्शी और भविष्य कथन के बारे में अपनी जानकारी को चित्र-विचित्र हरकतों द्वारा प्रकट करते हैं ।

शकुन विचार के बारे में यही मान्यता है । बिल्ली का रास्ता काट जाना-कुत्ते का कान फड़फड़ाना अशुभ है । इसमें यात्रा करने वाले को कोई अनिष्ट होने का डर रहता है । न्यौले का—नीलकंठ का दर्शन शुभ है । पशु—पक्षी अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वभाववश कुछ न कुछ हरकतें करते रहते हैं । उन्हीं से लोग शुभ–अशुभ का तुक बिठाते हैं । छिपकली सदा दीवारों पर, छत पर चिपकी रहती है । झपकी आने पर उनके पंजे की पकड़ ढीली हो जाती है, तो वह नीचे जमीन पर गिर जाती है । संयोगवश कोई आदमी बैठा हो, तो यह संगति बिठाई जाती है कि छिपकली किस अंग पर गिरी और उसका भला या बुरा क्या प्रभाव पड़ना चाहिए । मुडेर पर उल्लू का बैठना किसी अनिष्ट की सूचना है । कौआ बैठे और बोले तो समझना चाहिए कि वह किसी अतिथि आगन्तुक की पूर्व सूचना देने आया है । किसी के सिर पर कौआ बैठ जाय, तो उस व्यक्ति की मृत्यु होने का संकेत माना जाता है । जिस दिन किसी की मृत्यु हुई हो, उस दिन वह घर वालों से दावत या कपड़े आदि की सहायता माँगने आता है । न दिया जाय, तो रुष्ट होकर अनिष्ट करता है ।

ग्रहों का फेर हर आदमी के पीछे लगा रहता है । इसमें कुछ शुभ हैं, कुछ अशुभ । राहु-केतु शनिश्चर, मंगल आदि की दशा आने पर हानि होती है । सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु आदि शुभ माने जाते हैं । पंडित, लोगों ने एक गणित बना रखा है, जिसके हिसाब से यह बताया जाता है कि कौनसा ग्रह किसके ऊपर–कितने दिन-कब से कब तक- सवार रहेगा । उस हिसाब से उसे अच्छे दिन या बुरे दिनों की आगाही दी जाती है । साथ ही यह भी कहा जाता है कि अशुभ ग्रहों को शान्त कराने के लिए कुछ जप-अनुष्ठान पंडितों द्वारा कराया जाय, तो वे शान्त भी हो जाते हैं । यह नहीं बताया जाता कि अकारण क्यों तो यह ग्रह-नक्षत्र उलटे-सीधे पड़ते हैं ? और क्या कारण है कि पंडितों को दक्षिणा देने पर वे शान्त हो जाते है । पंडितों की और ग्रह-नक्षत्रों की आपस में रिश्तेदारी है । देवताओं को प्रसन्न करने की ऐजेन्सी किस आधार पर इन पंडितों को मिली हुई है, इनके द्वारा किये गये क्रिया-कृत्य ही क्यों इन देवताओं को संतोष देते हैं, अन्य कोई उसी पूजा-प्रार्थना को स्वयं करलें, तो उनका समाधान क्यों नहीं होता ?

नक्षत्रों की भी ऐसी ही विचित्र माया है । दो-दो नक्षत्रों के ऐसे जोड़े हर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महीने आते हैं, जिन्हें मूल कहा जाता है, उनमें किसी के घर कोई बालक उत्पन्न हो, तो वह माता, पिता, भाई, बहन आदि के लिए अनिष्टकर होता है। इस अनिष्ट से बचने के लिए मूल-शान्ति का खर्चीला क्रिया-कृत्य करना पड़ता है। न करने पर वे हानि करके रहते हैं। बच्चे के जन्म की प्रसन्नता होनी चाहिए पर जब बताया जाता हैं कि वह मूल नक्षत्रों में परिवार में धन-जन की हानि करेगा, तो सारा परिवार स्तब्ध रह जाता है। लड़की हो तो कामना करते हैं कि यह किसी प्रकार मर जाय; तो परिवार के अन्य लोगों की विपत्ति टल जाय।

२८ नक्षत्रों में अंतिम पांच को पंचक कहा जाता है। यदि उन दिनों किसी की मृत्यु हो जाय, तो घर के अन्य पांच लोगों की मृत्यु होने का डर रहता है। इसलिए पंचक शान्त करने के लिए पंडित के कहे अनुसार पंचक शांति कृत्य करना पड़ता हैं। पैसा खर्च कर देने पर भी पेट में यह डर घुसा ही रहता है कि कहीं घर में से किन्हीं की मृत्यु न हो जाय।

कहीं आना-जाना हो, तो देखना होता है कि उस दिन चन्द्रमा, योगिनी, काल राहु रास्ता रोके तो नहीं बैठा है। हर दिन इनमें से किसी न किसी का फेरा रहता है, इसलिए कहा जाता है कि उस दिन यात्रा न की जाय। की गई और हानि हो गई, तो कहा जाता है कि हमारी बात नहीं मानी गई, इसलिए घाटा उठाना पड़ा। हानि नहीं हुई तो कहा जाता है कि हमने अशुभ को शांत कर दिया।

इस प्रकार शकुन और मुहूर्तों का इतना बड़ा जंजाल है कि उनमें अधिकांश हानिकर ही निकलते हैं। जिस प्रकार धूर्त हकीम छोटी बीमारी को बहुत भयंकर बताकर रोगी को- उसके घर वालों को हड़बड़ा देते हैं और सीधे-साधे सस्ते इलाज के बदले ढेरों पैसे वसूल करते हैं। उसी तरह ज्योतिषियों का भी धंधा है कि पूछ-ताछ करने वालों को कोई न कोई अशुभ-अनिष्ट बताकर उन्हें डरा दें। असमंजस में डाल दें और फिर उसको शांत करने के नाम पर पैसा वसूल करें। वह कर देने पर भी मन में डर तो घुसा ही रहता है कि कहीं कोई विपत्ति न आ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टूटे । असमंजस में पड़ा हुआ मन प्रायः शंकित रहने के कारण घाटे की परिस्थिति ही पैदा करता है, यह मनोविज्ञान का सिद्धान्त है कि घबराया हुआ व्यक्ति घाटा उठाता है । सफलता के लिए उल्लास-उत्साह चाहिए । मुहूर्त पूछने पर उनमें से अधिकांश खराब ही निकलते हैं । ग्रह-दशा के बारे में यही बात है । कभी भी पूछिए इतने सारे ग्रहों में से कोई न कोई चौथा, आठवाँ, बारहवाँ निकल ही आवेगा । डर पैदा करने के लिए इतना ही काफी है ।

यह सब उस जमाने की बातें हैं जिसमें विज्ञान का विकास नहीं हुआ था । आकाशस्थ ग्रह नक्षत्रों का स्वरूप मालूम नहीं था, उन्हें व्यक्ति विशेष माना जाता था और समझा जाता था कि वे उनमें से कोई न कोई, किसी न किसी पर कुपित बना रहता है, इसलिए यदि खैर मनानी है, तो उनके ऐजेन्टों को खर्चीले शांति-कृत्य कराने के लिए पैसा दिया जाय ।

पर अब स्थिति बदल गई है । समझ लिया गया है, कि ग्रह नक्षत्र निर्जीव पिण्ड हैं । उनमें न चेतना है, न समझ, फिर अकारण इतने सारे मनुष्यों पर राशि फेर के कारण सदा कुपित रहे, हानि पहुँचाये, यह कैसे हो सकता है ? यह जंजाल उन्हीं के गले पड़ता है । जो इस अंधविश्वास से ग्रसित हैं । जो इस झंझट से दूर हैं । जो फलित ज्योतिष पर विश्वास नहीं करते । जिनका दृष्किोण बुद्धिवादी—वैज्ञानिक है, उन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता और न वे व्यर्थ ही पैसा लुटाते हैं । न डरते हैं, न असमंजस में पड़ते हैं ।

शकुन के सम्बन्ध में भी यही बात है, पशु-पक्षी आये दिन इधर से उधर दौड़ते फिरते ही हैं, उन बेचारों पर शुभ-अशुभ का निर्णय करना सर्वथा निरर्थक है । छींक आना, आँख के पलक आदि में फड़कन होना, यह शरीर की साधारण क्रियाएँ हैं, इनके साथ शुभ-अशुभ की संगति बिठाने का क्या तुक हो सकता है ?

मरने के बाद प्राणी दूसरे शरीर में चला जाता है, अन्यत्र जन्म धारण कर लेता है । फिर उसको सुविधाएँ पहुँचाने की जिम्मेदारी परिवार वालों पर कैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रही ? यदि रही भी, तो ऐजेन्ट लोगों के घर में गया माल उन मृतात्माओं के पास कैसे पहुंच जायेगा ?

हर मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है । अपना पराक्रम-पुरुषाथ जिस भी दिशा में लगाता है, उसी दिशा में प्रगति होती है । गुण, कर्म, स्वभाव को बिगाड़ लेने पर आलसी-प्रमादी-कुकर्मी स्तर की गतिविधियाँ बना लेने पर किसी का भी भविष्य बिगड़ सकता है । अपने को सुधारने और सत्प्रयोजनों में संलग्न रहने पर किसी का भविष्य सुधर सकता है । यदि जन्म कुंडली के आधार पर किसी का भविष्य निश्चित हुआ करे, तो फिर कर्म का-पुरुषार्थ का क्या महत्व रहेगा ? यदि कुंडली के ग्रह अच्छे हैं, तो आलसी-प्रमादी- दुर्गुणी रहने पर भी भविष्य उत्तम रहेगा और यदि ग्रह खराब हैं, तो पराक्रमी को भी असफलता मिलेगी। ऐसी दशा में पराक्रम का कोई महत्व ही नहीं रह जाता ? जब कि हर मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है ।

जिन दिनों विवाह के मुहूर्त निकलते हैं । उन दिनों बाजे वालों, हलवाइयों, सवारियों की कितनी परेशानी होती है, जिन दिनों नहीं होते, उन दिनों वे सभी खाली बैठे रहते हैं; जब कि होना यह चाहिये कि सुविधा का अवसर देखकर विवाह शादी किये जाँय, ताकि सभी को सुविधा रहे ।

किस लड़की का किस लड़के से विधि वर्ग मिला या नहीं ? यह बात परिवार वालों को देखनी है । दोनों पक्षों की उपयुक्तता मिलती हो, तो समझना चाहिए कि जोड़ी मिल गई । पर पंडित लोग इसमें भी अड़ंगा लगाते हैं । अच्छे-खासे संबध को अशुभ ठहरा देते हैं और उपयुक्त जोड़ों को अपने जोड़ -बाकी के हिसाब से रद्द कर देते हैं । लड़के का मंगली होना या लड़की का म'गली होना, एक ऐसा संकट है कि उन बेचारों को जन्म भर के लिए अभागा ही ठहरा दिया गया । यदि वे जन्म कुंडली के झंझट में पड़ गये, तो सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी, उन्हें अभागा ही ठहराया जायेगा और कहा जायेगा की यह विधवा या विधुर होगें ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार चिन्तामग्न रहते हैं और वर-वधू से लेकर अन्य सम्बन्धीजनों तक यही सोचते हैं कि इस सम्बन्ध के कारण जोड़ी में से किसी पर विपत्ति न टूट पड़े ।

सारे संसार में जहाँ कुंडलियाँ नहीं मिलाई जातीं, वहाँ दोनों पक्ष की परिस्थितियाँ भर देख लेना पर्याप्त माना जाता है । यह हिन्दू ही हैं, जो कुंडली के फेर में पड़कर अच्छे-खासे सम्बन्धों को रद्द कर देते हैं और जहाँ नहीं करना चाहिए, वहाँ विधि वर्ग मिलने की बात पंडित द्वारा कर दिये जाने पर अनुपयुक्त परिस्थितियों में भी गले मढ़ देते हैं ।

इसी कुचक्र में विवाह के उपयुक्त अवसर भी गँवाने पड़ते हैं सूर्य, ब्रहस्पति, चौथे,आठवें, बारहवें होने के फेर में कई-कई वर्ष विवाह नहीं बनते । इस बीच परिस्थितियाँ बदल सकती हैं और नये प्रकार के नये अड़ङ्गे खड़े हो सकते हैं ।

इन मान्यताओं के पीछे कोई वास्तविकता-यथार्थता नहीं हैं । केवल अंध विश्वास का ही कुतर्क काम करता है । यह आफत केवल कुछ प्रांतों में सवर्ण हिन्दुओं पर ही आती है, जो इन अन्धविश्वासों के दायरे से बाहर हैं, वे मात्र सुविधा और अनुकूलता ही देखते हैं । विचारशील लोग देखते हैं कि इन मूढ़ताओं के पीछे कोई तक–तथ्य नहीं है, इसलिए वे इस झझट को दूर से ही नमस्कार करते हैं ।

रीति-रिवाजों के प्रथा-प्रचलनों के जितने झझट हिन्दू समाज के गले बंधे हैं- इतने कदाचित् ही कहीं होते हैं । खास तौर से विवाह-शादियों के समय तथा आगे-पीछे इतने प्रकार के अलन-चलनों की लकीर पीटी जाती है कि उनमें ढेर पैसा, समय, श्रम, चिन्तन बर्बाद होता है । इस बर्बादी में किसी को कोई लाभ नहीं । दोनों पक्षों के दस–बीस मित्र-कुटुम्बी मिलकर विवाह की शास्त्रीय परम्परा पूरी कर लें तो. उसमें सौ-दो सौ रुपये से अधिक खर्च होने का कोई कारण नहीं । यह मूढ़-मान्यताओं और व्यर्थ-परम्पराओं का जंजाल ही है, जिसम दोनों पक्षों का इतना समय और पैसा लगता है कि एक प्रकार से दिवालिया हो जाते हैं । दोनों परिवारों का भविष्य अन्धकारमय बन जाता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जातियों - उपजातियों का जंजाल इतना भयंकर है कि उसने एक हिन्दू समाज को सैकड़ों टुकड़ों में बाँट दिया है। रोटी–बेटी के मामले में हर बिरादरी अपने को एक अलग समाज या राष्ट्र मानती है। छूत-अछूत की मान्यता तो और भी भयकर है, इसने अपनों को विराना बना दिया है। अपने यहाँ वेष और वंश की प्रधानता मिलती है, जब की गुण, कर्म, स्वभाव के अनुरूप वर्ग बनने चाहिए।

हिन्दू समाज में स्त्रियों को पर्दे के कंदखाने में बन्द करके उन्हें अपंग की स्थिति में बना दिया गया है। पुरुषों के लिए कानून दूसरे और स्त्रियों के लिए दूसरे, जबकि दोनों ही एक मनुष्य जाति के अविच्छिन्न अंग हैं। जिन देशों में स्त्री-पुरुषों की समानता है, वहाँ की उन्नति देखते ही बनती है। एक हम हैं, जो आधे समाज को कैदियों की तरह जेल में बन्द रखते हैं। उनकी योग्यता बढ़ाकर के पुरुषार्थ का लाभ उठाते हुए पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति को समुनन्त बना सकते हैं।

भारतीय समाज में अगणित विशेषताएँ होते हुए भी एक भयानक दोष है, अन्धविश्वास की बेड़ियों में जकड़े रहने का। इन्हीं के कारण दो हजार वर्ष लम्बी गुलामी भुगतनी पड़ी। आर्थिक दृष्टि से बर्बाद हुए और समझदारों की दृष्टि में मूर्ख तथा पिछेड़े हुए कहलाये। इस दुर्भाग्य से हम जितनी जल्दी छूट सकें, उतना ही उत्तम हैं।

क्रमांक–२४७। युगान्तर चेतना प्रेस–शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य–४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org